Content

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना		१
अध्याय – १		३४
भक्ति – सैद्धांतिक चर्चा		
१.	भक्ति की व्याख्या और स्वरुप	३५
२.	विद्वानों के मत से भक्ति की विविध परिभाषाएँ	३७
३.	भक्ति के लक्षण	३९
४.	भक्ति के प्रकार	४०
५.	भक्ति का रहस्य	४२
भक्ति की परंपरा :		
६.	भक्ति की उत्पत्ति के विषय में पक्ष-विपक्ष में विविध विद्वानों के मत	४५
७.	वेदों में भक्ति	५२
८.	उपनिषदों में भक्ति	६४
९.	पुराणों में भक्ति	७०
१०.	रामायण में भक्ति	७८
११.	गीता में भक्ति – प्रपत्ति	८१
१२.	नारद भक्ति सूत्र में भक्ति	९०
१३.	शांडिल्य भक्तिसूत्र में भक्ति	९३
१४.	हिन्दी साहित्य में भक्ति-निर्गुणधारा – कबीर, जायसी	९५
१५.	सगुण धारा-राम भक्ति शाखा – तुलसी कृष्ण भक्ति शाखा – सूर, रसखान, मीरा ।	१०६

अध्याय - २

दर्शन विश्लेषण तथा मूल्यांकन

१६.	भूमिका	१२२
१७.	दर्शन की व्याख्या और अर्थ	१२४
१८.	दर्शन की उपयोगिता	१२४
१९.	दर्शन तथा फिलासफी	१२७
२०.	भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शनों का नामोल्लेख	१२८
२१.	श्रौतदर्शन	१२८
२२.	ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद	१३३
२३.	श्रौतदर्शन के मुख्य विचार और चरम लक्ष्य	१३५
२४.	ज्ञान	१३७
२५.	ज्ञान शब्द की व्युत्पत्ति और विविध अर्थ	१३८
२६.	ज्ञान के विविध अर्थ गीता के आधार पर	१३९
२७.	ज्ञान के प्रकार	१४१
२८.	ज्ञान का स्वरुप	१४२
२९.	बौद्धिक ज्ञान	१४६
३०.	सापेक्ष ज्ञान	१४७
३१.	निरपेक्ष ज्ञान	१४८
३२.	सत्य और असत्य - अर्थ और परिभाषा	१४९
३३.	ज्ञान के साधन	१५१
३४.	ज्ञान का उदय	१५२
३५.	विविध दर्शन के अनुसार ज्ञान	१५३
३६.	भारतीय चिंतन परंपरा में ज्ञान का महत्व	१५४
३७.	रहस्यवाद का अर्थ और स्वरूप	१६१
३८.	विविध विद्वानों के मत से रहस्यवाद की परिभाषा	१६२
३९.	वेद में रहस्यवाद	१६३

४०.	उपनिषद् में रहस्यवाद	१६५
४१.	रहस्यवाद की लाक्षणिकताएँ	१६७
४२.	निर्गुण विचारधारा का स्वीकार	१६८
४३.	प्रेम का स्वरुप और रहस्यवाद में इसकी अभिव्यक्ति	१६९
४४.	रहस्यवाद का वर्गीकरण	१७२
४५.	निर्गुण परंपरा	१७३
४६.	सगुण परंपरा	१७३
४७.	कबीर	१७४
४८.	जायसी	१७६
४९.	भारत के अतिरिक्त रहस्यवाद	१७७
५०.	रहस्यवाद के भेदोपभेद	१७९
५१.	आत्मा और आत्मा का स्वरुप	१८०
५२.	अहंकार : अहंकार के प्रकार	१८६
५३.	लौकिक अहंकार	१८९
५४.	अहंकार की उत्पत्ति अविद्या से	१९०
५५.	ज्ञान प्राप्ति में अहंकार रहित होना अनिवार्य	१९०
५६.	पारमार्थिक अहंकार	१९१
५७.	अहं और आत्मा	१९२
५८.	मनसंबंधी विचार	१९४
५९.	मनोनिग्रह के साधन	१९६
६०.	मन और हृदय	१९७
६१.	जन्म-मृत्यु संबंधी विचार	१९९
६२.	जन्म-मृत्यु से मुक्ति कैसे	२०१
६३.	जगत् - विविध दर्शनों के आधार पर	२०२
६४.	माया-माया की व्याख्या और स्वरुप	२०६
६५.	माया के प्रकार - विद्या - अविद्या	२०७

६६.	माया की सर्वव्यापकता	२०८
६७.	द्वैत-अद्वैत का भेद माया के कारण	२०९
६८.	ईश्वर संबंधी चिंतन	२१०
६९.	ईश्वर का स्वरुप	२१०
७०.	जगत् की सृष्टि ईश्वर से	२१२
७१.	जीव, ईश्वर और माया	२१२
७२.	ईश्वर शासक, पालक, पोषक और नाशक	२१३
७३.	साधना संबंधी चिंतन-कर्ममार्ग	२१४
७४.	ज्ञानमार्ग और गुरु की आवश्यकता	२१५
७५.	भक्तिमार्ग ।	२१५

अध्याय - ३
तुलसी साहित्य में भक्ति और दर्शन

दोहावली २१७

७६. युग का प्रभाव २१८

७७. भूमिका २२३

७८. तुलसी की रचनाओं में भक्ति २२४

७९. ग्रंथ परिचय - दोहावली के राम २२५

८०. नामजाप महिमा २२७

८१. करुणामय श्री राम का स्वभाव २३२

८२. भक्त की अभिलाषा २३४

८३. रामप्रेम की महत्ता २३४

८४. कल्याण का सुगम उपाय २३५

८५. रामप्राप्ति का सुगम उपाय २३६

८६. शरणागति की महिमा और भक्ति का स्वरुप २३७

८७. श्री राम कृपा क्या है ? २३८

८८. भजन की महिमा २३९

८९. भक्त की प्रार्थना और विनम्रता २४०

विनयपत्रिका - ग्रंथ परिचय । २४१

९०. विनयपत्रिका का अर्थ २४२

९१. भक्ति की कठिनता २४४

९२. अवतार वंदना २४४

९३. शैव वैष्णव समन्वय भक्ति २४५

९४. मानसी पूजा २४५

९५. स्मार्त भक्तिभाव २४६

९६. अनौपचारिक सख्यभाव २४६

९७. षोड़शोपचार पूजा २४७
९८. प्रपत्ति । २४८

कवितावली

९९. ग्रंथ परिचय - कवितावली में भक्ति २५६
१००. दुःख निवृत्ति का अमोघ साधन भक्ति २५७
१०१. दीनभाव के साथ नामस्मरण २५७
१०२. चातकभाव - प्रपत्ति सिद्धांत २५८
१०३. भक्ति में विनय की सात भूमिका । २५९
१०४. आर्तभक्ति २६०

गीतावली में भक्ति

१०५. ग्रंथ परिचय २६०
१०६. रामभक्ति में निष्ठातत्व का विस्तृत दर्शन २६१

तुलसी साहित्य में दर्शन **२६२**
१०७. दोहावली में दर्शन २६३
१०८. ब्रह्मराम २६३
१०९. ईश्वरमहिमा २६३
११०. जीव २६३
१११. जीव की तीन दशाएँ २६४
११२. सृष्टि २६४
११३. माया - वाहिनी २६४
११४. माया की दुर्ज्ञेयता २६४
११५. माया की प्रबलता और इससे मुक्त होने का उपाय २६५
११६. ज्ञान २६५
११७. ज्ञान की कठिनता २६५

विनयपत्रिका में दर्शन

११८. ब्रह्मराम २६६
११९. राम की माया २६८
१२०. जगत् २७०
१२१. जीव २७१
१२२. मोक्ष - साधन २७२

कवितावली में दर्शन

१२३. निर्गुण की अपेक्षा सगुण अधिक रुचिकर २७४
१२४. सर्वशक्तिमान राम २७४
१२५. ब्रह्म का अवतार क्यों ? २७५
१२६. जगत् २७५
१२७. जीव २७५
१२८. दुःख निवृत्ति के साधन २७५

गीतावली में दर्शन

१२९. ब्रह्मराम का सगुण स्वरूप २७६
१३०. ब्रह्म, जीव और माया २७६

अध्याय–४

रामचरित मानस में भक्ति

१३१. भक्त हृदय तुलसी २७९
१३२. मानस में पग पग पर भक्ति का महिमागान २८०
१३३. अविद्या से छूटने का एकमात्र उपाय भक्ति २८३
१३४. प्रेमाभक्ति २८४
१३५. हरिभक्ति का परिणाम २८५
१३६. भक्ति से माया से मुक्ति २८५
१३७. परम सुख का मार्ग भक्ति २८५
१३८. भक्ति–परमार्थ का स्वरुप २८६
१३९. भक्ति का स्वरुप २८६
१४०. सब साधनों का एकमात्र फल भक्ति २८७
१४१. भक्ति के आगे मुक्ति का भी त्याग २८८
१४२. रामभक्ति विज्ञान से भी दुर्लभ २९१
१४३. भक्त प्रभु का परमप्रिय पात्र २९२
१४४. ज्ञान और भक्ति में भक्ति श्रेष्ठ २९३
१४५. ज्ञान दीपक और भक्ति मणि २९६
१४६. भक्ति के बिना मोक्ष असंभव २९८
१४७. रामभक्ति भवसिंधु में नैया समान २९८
१४८. भक्ति क्लेश नाशक और सुखदायक २९९
१४९. कलियुग में एकमात्र साधन भक्ति ३०१
१५०. मनुष्य देह की सार्थकता केवल भक्ति में ३०२
१५१. माया से मुक्ति का एकमात्र साधन रामकृपा ३०३
१५२. रामकृपा से दुर्लभ बातें भी सहज सुलभ ३०४
१५३. दुर्गुणों का शमन भी रामकृपा से ३०५
१५४. रामकृपा की प्राप्ति कैसे ? ३०५

१५५. प्रेमपूर्वक रामभक्ति ३०५
१५६. भक्त के रक्षक श्रीराम ३०७
१५७. गर्वभंजन श्रीराम ३१०
१५८. शरणागत रक्षक श्रीराम ३११
१५९. न मे भक्त प्रणश्यति ३१३
१६०. भक्ति के साधन ३१३
१६१. रामकथा का प्रभाव ३१५
१६२. रामभक्ति की चौदह भूमिकाएँ ३१६
१६३. भक्ति के प्रादुर्भाव के लिए कार्यमूलक, ज्ञानमूलक और भक्तिमूलक उपासना मार्ग ३३६
१६४. शिव-राम की समन्वय भक्ति ३३८
१६५. भक्ति के अवलंबन - सगुण राम ३४१
१६६. मुक्ति के प्रकार ३४५
१६७. भेद-भक्ति ३४७
१६८. नवधा भक्ति ३४९
१६९. श्रीराम की उदारता ३५१
१७०. मानस की भागवत् मतानुसार नवधा भक्ति ३५१
१७१. भक्ति रस - वत्सलभक्ति रस ३५४
१७२. शांतभक्ति रस ३५५
१७३. प्रेयान भक्तिरस ३५५
१७४. मानस की पारिवारिक भक्तिभावना ३५७
- मातृ-पितृ भक्ति ३५७
- पतिभक्ति ३५९
- भ्रातृभक्ति ३६१
- स्वामी भक्ति अथवा राजभक्ति ३६६
१७५. श्रीराम के प्रति पशु और जड़ तत्वों की भक्ति ३६८

रामचरित मानस में दर्शन

अध्याय ५

१७६.	भूमिका	३७०
१७७.	तुलसी के दर्शनानुसार राम	३७१
१७८.	सच्चिदानंद स्वरूप राम	३७२
१७९.	भक्तहित सगुण ही निर्गुण और निर्गुण ही सगुण	३७३
१८०.	सगुण निर्गुण में अभेद्य	३७९
१८१.	राम की मनुष्यलीला में माया का आश्रय	३७९
१८२.	निर्गुण की अपेक्षा सगुण स्वरूप गूढ़	३८०
१८३.	सगुण राम में मोह होने का कारण अज्ञान	३८२
१८४.	विष्णु अवतार श्री राम	३८३
१८५.	परब्रह्म विष्णु	३८७
१८६.	ब्रह्म - राम - विष्णु तीनों में अभेद्य	३८९
१८७.	राम विष्णु से भी श्रेष्ठ	३९०
१८८.	राम का सामर्थ्य	३९४
१८९.	राम के विविध अवतार	३९७
१९०.	राम के अवतार का हेतु	३९८
१९१.	लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न अंशावतार	४०१
१९२.	शेषावतार लक्ष्मण	४०२
१९३.	शेषावतार अखिल विश्व का कारण	४०४
१९४.	ब्रह्म लक्ष्मण	४०५
१९५.	विश्व का पोषक भरत	४०७
१९६.	शत्रुसूदन शत्रुघ्न	४०७
१९७.	वानरादि में देवत्व	४०७
१९८.	वानरादि की सगुण ब्रह्मोपासना	४०९
१९९.	सीता	४०९
२००.	योगमाया सीता	४१०
२०१.	मूल-प्रकृति सीता - लक्ष्मीस्वरूपा सीता	४११

२०२. सीता का लक्ष्मी से भिन्नत्व ४१२
२०३. मायास्वरुपा सीता ४१४
२०४. माया का कार्य ४१४
२०५. अखिल ब्रह्मांड मायावश ४१५
२०६. ब्रह्म के बल से माया की क्रियाशीलता ४१५
२०७. ब्रह्म के बल से जड़माया का सत्याभास ४१६
२०८. माया पर राम का आधिपत्य ४१७
२०९. जगत् ४१८
२१०. विश्वरुप विराट् ४१९
२११. मायाजनित जगत् वृथा और केवल राम सत्य ४२०
२१२. जगत् स्वप्नवत् ४२०
२१३. जीव - जीव का स्वभाव ४२२
२१४. ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी जीव की कक्षा में ४२३
२१५. जीव का अक्षरत्व ४२३
२१६. जीव और ईश्वर में अभेद्य ४२४
२१७. आत्मानुभूति से भ्रमनिवारण ४२४
२१८. मायावश जीव ४२५
२१९. जीव की गति कर्मानुसार ४२५
२३०. विद्या और अविद्या ४२५
२३१. ब्रह्मज्ञान से भेद, भ्रम और आवागमन का अंत ४२७
२३२. ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति से जीव की ब्रह्ममयता ४२७
२३३. बोध ज्ञान ४२७
२३४. परमार्थ ४२८
२३५. मनुष्य देह की दुर्लभता और
मनुष्य देह परमार्थ मार्ग के लिये श्रेष्ठ । ४२८

अध्याय - ६

२३६. उपसंहार ४३०